

- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन-इसरो ने श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र शार, से देश के नये विकसित शक्तिशाली रॉकेट जीएसएलवी मार्क-श्री डी वन का सफल प्रक्षेपण किया और इसके ज़रिए उपग्रह जी सैट-19 को भू-स्थिर कक्षा में स्थापित किया।
- जीएसएलवी मार्क-श्री का यह प्रथम कक्षीय मिशन था, जिसका लक्ष्य पूरी तरह देश में निर्मित क्रायोजेनिक इंजन सहित, इस यान की क्षमता का मूल्यांकन करना था।
- उपग्रह जी सैट-19 का भार वजन तीन हजार 136 किलोग्राम है।
- भारत की धरती से छोड़ा जाने वाला यह देश का सबसे भारी उपग्रह है।

शीर्षक	लॉन्च	लॉन्चर टाइप	पेलोड
जीएसएलवी एमके तृतीय-डी 1 / जीएसएटी -19 मिशन	5 जून 2017	जीएसएलवी-एमके-तृतीय	जीसैट -19

तकनीकी विशेषताएं

- जीओसिंक्रोनस स्थानांतरण ऑर्बिट (जीटीओ) में पेलोड:
- जीएसएलवी एमके तृतीय जीसैट श्रृंखला वाला राकेट है जो 4 टन तक के उपग्रहों को जिओसिंक्रोनस स्थानान्तरण कक्षाओं में रखने में सक्षम होगा।

लो अर्थ ऑर्बिट (लीओ) के लिए पेलोड:

- जीएसएलवी एमके III एक शक्तिशाली क्रायोजेनिक चरण वाला राकेट है जो 600 किलोमीटर की ऊंचाई पे कम पृथ्वी कक्षाओं में 8 टन तक भारी पेलोड रखने में सक्षम है।

क्रायोजेनिक अपर स्टेज: C25

- सी 25, भारत के सबसे बड़े क्रायोजेनिक इंजन, सीई -20 द्वारा संचालित है, जिसे लिक्विड प्रॉपलसन सिस्टम केंद्र द्वारा डिज़ाइन और विकसित किया गया है।

ठोस रॉकेट बूस्टर: एस 200

- जीएसएलवी एमके तृतीय दो एस 200 ठोस रॉकेट बूस्टर का उपयोग करता है जिससे प्रक्षेपण करने मे भारी मात्रा में दबाव (श्रस्ट) उपलब्ध हो सके। एस 200 विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र में विकसित किया गया है।

कोर स्टेज: L110 तरल स्टेज

- L110 तरल चरण, तरल(लिक्विड) प्रणोदन(प्रोपल्शन) सिस्टम केंद्र द्वारा डिज़ाइन और विकसित दो विकास इंजनों द्वारा संचालित है।